

BHARTHI COLLEGE OF EDUCATION



An Abode of Education
KANDRI, Mandar, Ranchi

B.Ed

SESSION: 2018-2020

EPC-2

PROJECT

DRAMA AND ART IN EDUCATION

EXTERNAL

Guided by:-

ASST. PROF./ LECT.
Mr. Rakesh kumar Rai

Submitted By:-

NAME :- NISHANT ASHISH TIRKEY
ROLL NO :- 12

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ

ಪ್ರಕಟ

ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ

ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ

ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ

ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ

ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ

आभार ज्ञापन

बी0एड0 की प्रशिक्षु होने के नाते मेरे लिए यह बड़े सौभाग्य की बात है कि मुझे EPC-2 के प्रोजेक्ट के कार्य हेतु "कला का अर्थ एवं अवधारणा, भारतीय परम्परागत शिल्पकला" पर अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ, इस प्रोजेक्ट कार्य करने के दौरान मुझे इससे सम्बंधित अनेक जानकारीयों मिली।

इस प्रोजेक्ट कार्य को प्रस्तुत करने में हमारी शैक्षिक सचिव श्रीमती दीपाली परासर एवं प्रभारी प्रचार्य एवं व्याख्याता राकेश कुमार राय ने विशेष योगदान दिया। जिसके लिए मैं आप सभी को विशेष आभार एवं हार्दिक कृतज्ञता का भाव व्यक्त करता हूँ।

मैं अपने माता-पिता सभी मित्रों एवं परिजनों को धन्यवाद देता हूँ। जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से मेरे प्रोजेक्ट कार्य में सहयोग प्रदान किये हैं।

धन्यवाद।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

ਪੰਨਾ 1

ਪੰਨਾ 1 ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਅਤੇ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ 'ਤੇ ਪਾਠ ਕਰੋ। ਪੰਨਾ 1 ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਪਾਸੇ 'ਤੇ ਪਾਠ ਕਰੋ। ਪੰਨਾ 1 ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਪਾਸੇ 'ਤੇ ਪਾਠ ਕਰੋ। ਪੰਨਾ 1 ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਪਾਸੇ 'ਤੇ ਪਾਠ ਕਰੋ।

ਪੰਨਾ 1 ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਪਾਸੇ 'ਤੇ ਪਾਠ ਕਰੋ। ਪੰਨਾ 1 ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਪਾਸੇ 'ਤੇ ਪਾਠ ਕਰੋ। ਪੰਨਾ 1 ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਪਾਸੇ 'ਤੇ ਪਾਠ ਕਰੋ। ਪੰਨਾ 1 ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਪਾਸੇ 'ਤੇ ਪਾਠ ਕਰੋ।



प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि निशांत आशिष तिकी बी0 एड0 की प्रशिक्षु ने वृद्धा आश्रम परियोजना कार्य को व्याख्याता राकेश कुमार राय की देखरेख में रूप में सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया।

इस अवधि में इनका कार्य सहयोगात्मक एवं सराहनीय रहा।

मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

प्रशिक्षु का नाम— निशांत आशिष तिकी

कक्षा — बी0 एड0 प्रथम वर्ष

क्रमांक— 12

व्याख्याता का नाम

राकेश कुमार राय

व्याख्याता का हस्ताक्षर

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

BHARTHI COLLEGE OF EDUCATION



An Abode of Education

Kandri, Mandar, Ranchi

B.Ed

SESSION: 2018-2020

EPC-2

PROJECT-1

TOPIC- "कला का अर्थ एवं अवधारणा"

EXTERNAL

Guided by: -

**ASST. PROF
RAKESH KUMAR RAI**

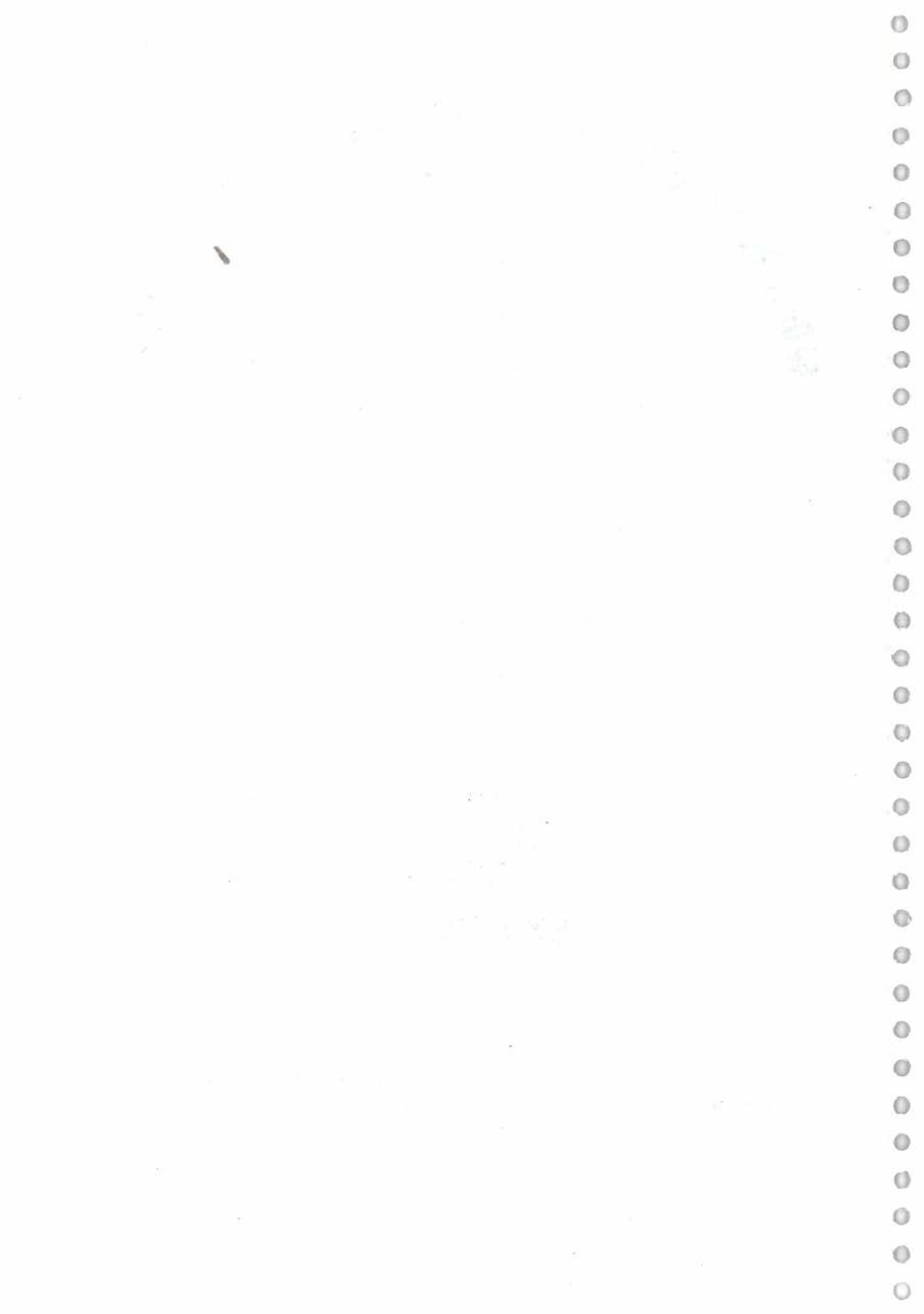
Submitted By:-

**NAME: - NISHANT ASHISH TIRKEY
ROLL NO: - 12
SESSION: - 2018-2020**

Attested

Principal

**Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi**



प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि निशांत आशिष तिकी बी० एड० के प्रशिक्षु ने EPC-2 परियोजना कार्य में राकेश कुमार राय की देखरेख में सफलता पूर्वक सम्पन्न किया गया।

इस अवधि में इनका कार्य सहयोगात्मक एवं सराहनीय रहा।

मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

प्रशिक्षु का नाम— निशांत आशिष तिकी

व्याख्याता का नाम

कक्षा— बी० एड० प्रथम वर्ष

प्रो० राकेश कुमार राय

सत्र— 2018—20

क्रमांक—12

व्याख्याता का हस्ताक्षर

Attested

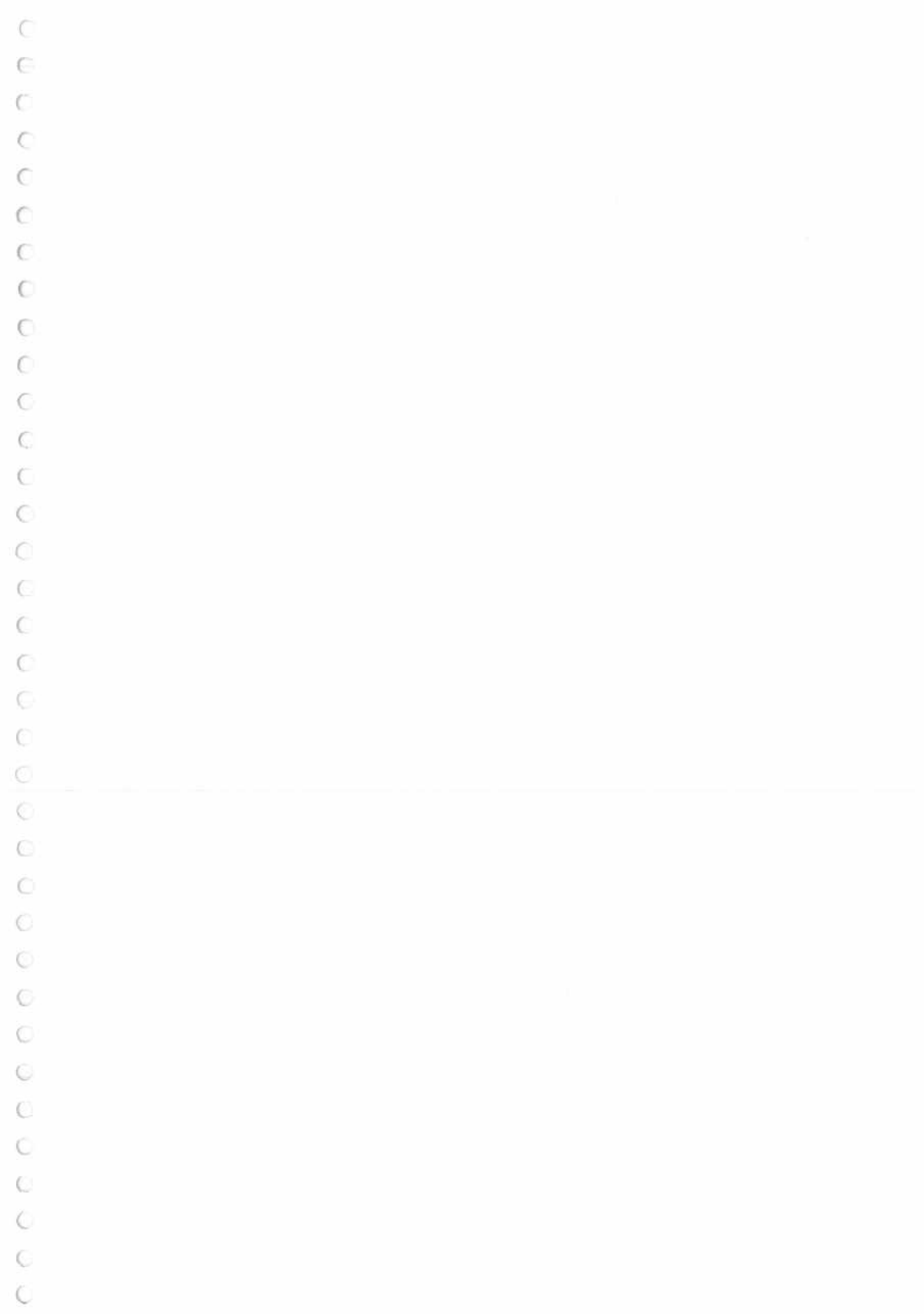
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

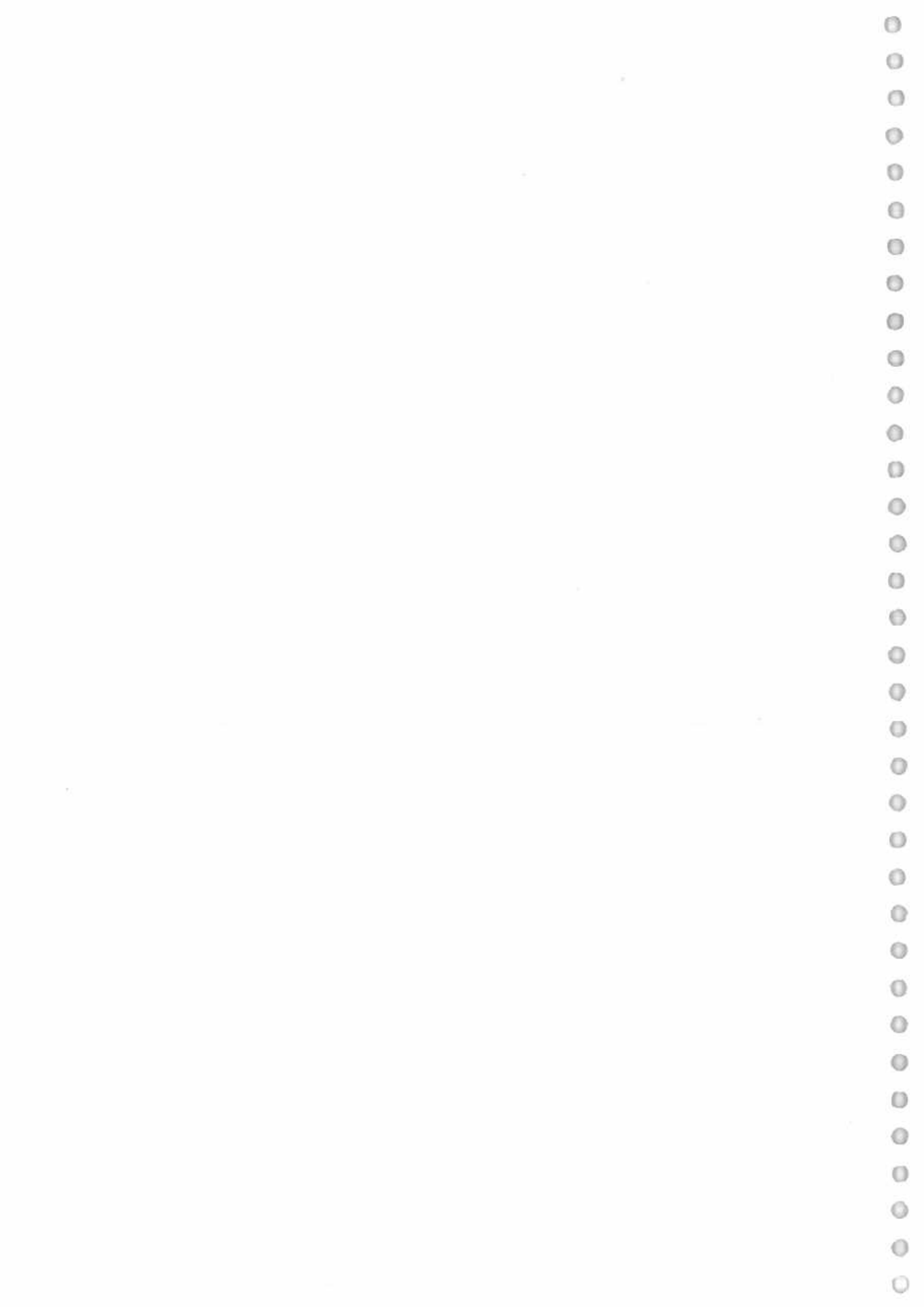
प्रश्न : कला का अर्थ एवं अवधारणा बताइए ।

परिचय :- कला (आर्ट) शब्द इतना व्यापक है कि विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएँ केवल एक पक्ष को छोड़कर रह जाती हैं । कला का अर्थ अभी तक निश्चित नहीं हो पाया है, यद्यपि इसकी हजारों परिभाषाएँ की गई हैं । भारतीय परम्परा के अनुसार कला उन सारी क्रियाओं को कहते हैं जिनमें कौशल अभिव्यक्त हो । युरोपिय शास्त्रियों ने भी कला में कौशल को महत्वपूर्ण माना है । कला एक प्रकार का कृतिम निर्माण है जिसमें शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है ।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi





कला का महत्व

जीवन उर्जा का महासागर है ।
जब अंतःचैतन्य जागृत होती है तो उर्जा
जीवन को कला के रूप में उभारती है । कला
कला, जीवन को सत्यम, शिवम, सुन्दरम से
समन्वित करती है । इसके द्वारा ही बृद्धि आत्मा
का सत्य स्वरूप झलकता है । कला उस
क्षितिज की भाँति है जिसका कोई क्षोर नहीं,
इतनी विशाल, विस्तृत, अनेक विद्याओं को
अपने में समेटे । तभी तो कवि मन कह
उठा -

साहित्य संगीत कला विहिनः ।

साक्षात् परतुः पुच्छ विद्यावहीन ॥

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के मुख से :- "कला में
मानुष्य अपने
भावों की अभिव्यक्ति करता है ।"

प्लेटो ने कहा :- "कला सत्य की अनुकृति
के अनुकृति है ।"

कला में ऐसी शक्ति होनी चाहिए
कि वह लोगों को संकीर्ण सीमाओं से ऊपर
ठोकर उसे ऐसे उच्च स्थान पर पहुँचा दे

Attested



Principal
Bharathi College of Education
Bharathi

कला के प्रकार

1. संगीत कला :- संगीत केवल मानवमात्र में ही नहीं अपितु पशु-पक्षियों व पेड़-पौधों में भी अमूल्य रस भर होता है। पशु-पक्षी भी संगीत से प्रभावित होकर झूम उठते हैं। यही नहीं मानव के अनेक रोगों का उपचार भी संगीत की तरंगों से संभव है। कहा भी गया है :-

संगीत है शक्ति ईश्वर की, हर सुर में बसे रमा
रागी को गाये रागिनी, रोगी को मित्रे क्षारमा॥

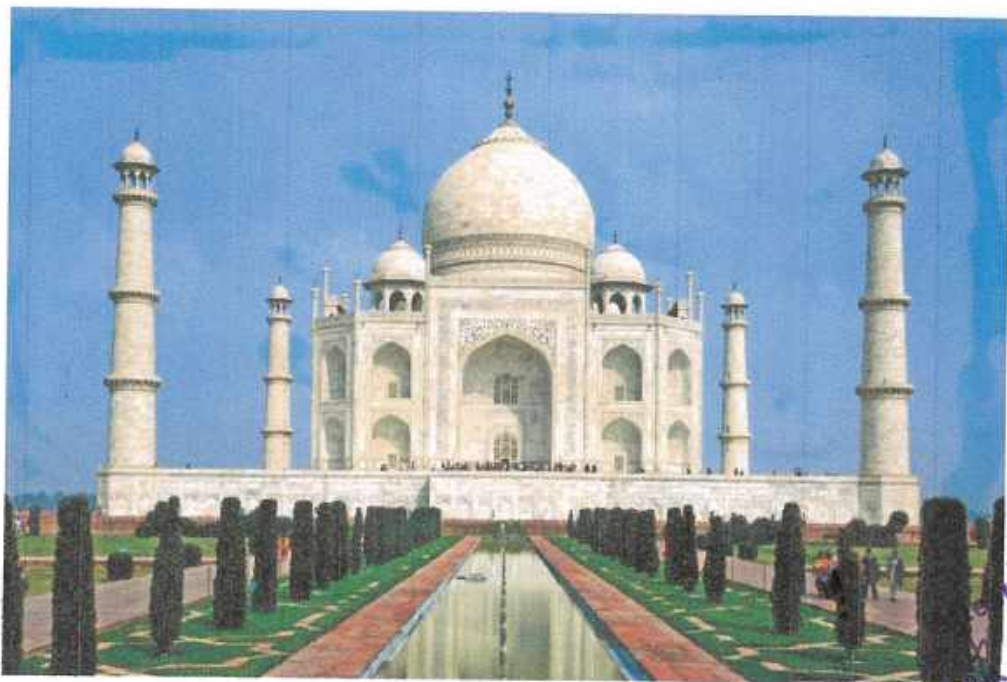
2. नृत्यकला :- चाहे भरतनाट्यम हो या कथक, मणिपुरी हो या कुचिपुड़ी, विभिन्न भाव-भंगिमाओं से युक्त हमारी संस्कृति व पौराणिक कथाओं को ये नृत्य जीवन-प्रदान करती हैं। शास्त्रीय हो या लोक नृत्य इनमें खोकर तब ही नहीं मन भी झूम उठता है।

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, ...

3. चित्रकला :- कलाओं में कला, चित्रकला है। मनुष्य स्वभाव से ही चित्र-करण की प्रवृत्ति रखता है। जैसा देखता है उसी प्रकार अपने को ढाँढ़ने का प्रयत्न करता है। भिन्न-रंगों से भरी दुनिया से चित्रकार अन-भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है जो दर्शक हतप्रभ रह जाता है। प्राचीन युग से ही जो चित्र पारिवर्षिक होते हैं वे मात्र एक विद्या नहीं अपितु मानवता के विकास का एक निश्चित सीपान प्रस्तुत करते हैं। चित्रों के माध्यम से आखेट करने वाले आदिमानव ने न केवल अपने संबंधों को बल्कि रहस्यमय प्रवृत्ति और जंगल के खूंखार प्रवासियों के विरुद्ध अपने अस्तित्व के लिए किये गये संघर्ष को भी अभिव्यक्त किया है।

4. वास्तुकला :- आज भारत की वास्तुकला का उल्लेख उदाहरण "ताजमहल" है जिसने विश्व की आपूर्व कलाकृतियों के साथ आश्चर्य में शीर्षस्थ स्थान पाया है। लालकिला, आज़मगढ़ मंदिर, कुतुबमीनार, आमा-मस्जिद भी भारतीय वास्तुकला का अनुपम उदाहरण रही हैं।

Attested



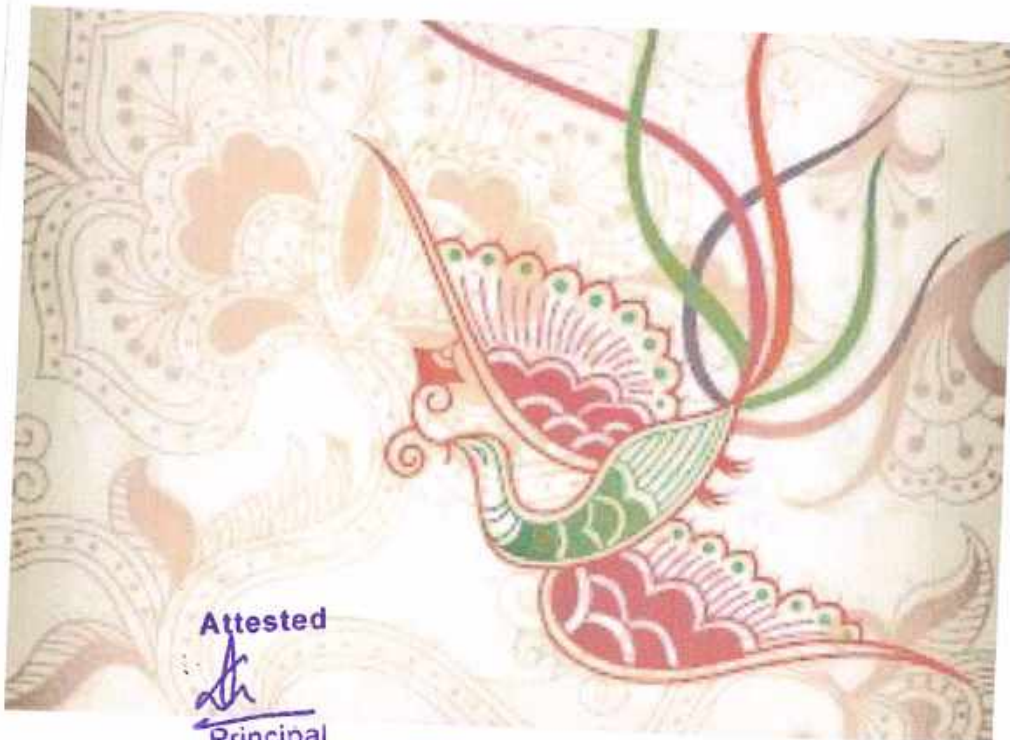
Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



१०. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

१. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.



Attested

[Signature]

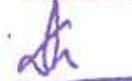
Principal

Bharathi College of Education
 Kandri, Mandar, Ranchi

5. लोक कला :- भारतीय संस्कृति में लोक कलाओं की खुशबू की महक आज भी अपनी प्राचीन परम्परा से समृद्ध है। जिस प्रकार आदिकाल से अब तक मानव जीवन का इतिहास कमबख्त वहीं मिलता उसी प्रकार कला का इतिहास कमबख्त नहीं है, परन्तु यह निश्चित है कि सहचरी के रूप में कला सदा से ही साथ रही है। विवाह और शुभ अवसरों में लोककला का विशिष्ट स्थान है। आज के आधुनिक युग में भी इसे आदर-भाव, महत्ता और उपासना की दृष्टि से देखा जाता है।

6. मधुबनी शैली :- मधुबनी शैली, पहाड़ी शैली, तंजौर शैली, मुगल शैली, बंगाल शैली, अपनी-अपनी विशेषताओं के कारण आज जनशक्ति के मन चिन्हित है। यदि भारतीय संस्कृति की मूर्तिकला व शिल्पकला को दर्शाने करने हों तो दक्षिण के मंदिर अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। यहाँ मिनाही मंदिर, बृहदीश्वर मंदिर, कोणार्क मंदिर अपनी पहचान के लिए प्रसिद्ध हैं।

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri Mander, Ranchi

1. The first part of the paper is devoted to a discussion of the general principles of the theory of the structure of the atom. It is shown that the structure of the atom is determined by the laws of quantum mechanics, which are based on the principles of wave mechanics and the uncertainty principle. The paper then proceeds to a detailed discussion of the structure of the atom, showing how the various parts of the atom are related to each other and how they are affected by the laws of quantum mechanics. The paper concludes with a summary of the results of the investigation and a discussion of the implications of the findings.

2. The second part of the paper is devoted to a discussion of the experimental results of the investigation. It is shown that the experimental results are in good agreement with the theoretical predictions of the theory of the structure of the atom. The paper then proceeds to a detailed discussion of the experimental results, showing how the various parts of the atom are related to each other and how they are affected by the laws of quantum mechanics. The paper concludes with a summary of the results of the investigation and a discussion of the implications of the findings.

विश्व विरासत सूची यूनेस्को में शामिल भारतीय चारों तरफ

क्रम संख्या	चारांतर	हाजिरा वर्ष
1	दिल्ली का लाल किला	1983
2	आजन्ता की गुफाएँ	1983
3	एलोरा गुफाएँ	1983
4	ताजमहल	1983
5	महाबलीपुरम के स्मारक	1984
6	कौशांबी का सूर्य मंदिर	1984
7	काजिरंगा नेशनल पार्क	1985
8	कैलाश नेशनल पार्क	1985
9	मानस सेन्धूरी	1985
10	गौवा का चर्च	1986
11	फतेहपुर सीकरी	1986
12	हम्पी अवशेष	1986
13	खजुराहो का मंदिर	1986
14	एलिफेन्टा की गुफाएँ	1987
15	चोल मंदिर	1987-2004
16	पहाड़कल का स्मारक	1987
17	सुंदरबन नेशनल पार्क	1987
18	नंदा देवी और फूलों की घाटी	1988-2005
19	सांची का स्तूप	1989
20	हुमायूँ का मकबरा	1993
21	फुलवमीनार	1993
22	माउन्टेन रेन्ज	1999-2005
23	लोबागावा का महाबोदी मंदिर	2002
24	भीमबेश्वा की गुफाएँ	2003
25	चंपानेर - घाबरगाड़ पार्क	2004
26	हतपति शिवाजी टर्मिनल	2004
27	लाल किला दिल्ली	2007
28	लखादेव की पाण्डुलिपियाँ	2007

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kamari Mandar Ranchi

Year	Month	Day	Time	Location	Remarks
1934	Jan	1	10:00	St. Paul	First day of the year
1934	Jan	2	10:00	St. Paul	Second day of the year
1934	Jan	3	10:00	St. Paul	Third day of the year
1934	Jan	4	10:00	St. Paul	Fourth day of the year
1934	Jan	5	10:00	St. Paul	Fifth day of the year
1934	Jan	6	10:00	St. Paul	Sixth day of the year
1934	Jan	7	10:00	St. Paul	Seventh day of the year
1934	Jan	8	10:00	St. Paul	Eighth day of the year
1934	Jan	9	10:00	St. Paul	Ninth day of the year
1934	Jan	10	10:00	St. Paul	Tenth day of the year
1934	Jan	11	10:00	St. Paul	Eleventh day of the year
1934	Jan	12	10:00	St. Paul	Twelfth day of the year
1934	Jan	13	10:00	St. Paul	Thirteenth day of the year
1934	Jan	14	10:00	St. Paul	Fourteenth day of the year
1934	Jan	15	10:00	St. Paul	Fifteenth day of the year
1934	Jan	16	10:00	St. Paul	Sixteenth day of the year
1934	Jan	17	10:00	St. Paul	Seventeenth day of the year
1934	Jan	18	10:00	St. Paul	Eighteenth day of the year
1934	Jan	19	10:00	St. Paul	Nineteenth day of the year
1934	Jan	20	10:00	St. Paul	Twentieth day of the year
1934	Jan	21	10:00	St. Paul	Twenty-first day of the year
1934	Jan	22	10:00	St. Paul	Twenty-second day of the year
1934	Jan	23	10:00	St. Paul	Twenty-third day of the year
1934	Jan	24	10:00	St. Paul	Twenty-fourth day of the year
1934	Jan	25	10:00	St. Paul	Twenty-fifth day of the year
1934	Jan	26	10:00	St. Paul	Twenty-sixth day of the year
1934	Jan	27	10:00	St. Paul	Twenty-seventh day of the year
1934	Jan	28	10:00	St. Paul	Twenty-eighth day of the year
1934	Jan	29	10:00	St. Paul	Twenty-ninth day of the year
1934	Jan	30	10:00	St. Paul	Thirtieth day of the year
1934	Jan	31	10:00	St. Paul	Thirty-first day of the year

निष्कर्ष

हमारी संस्कृति के इन तत्वों को प्राचीन काल से लेकर आज तक की कलाओं में देखा जा सकता है। इन्हीं जलित कलाओं ने हमारी संस्कृति को सत्यम्-दिवम्-सौन्दर्यम् जैसे अनेक साकारात्मक पहलुओं को चित्रित किया है। इन कलाओं के माध्यम से ही हमारा लोकजीवन लोकमानस तथा जीवन का आंतरिक और आध्यात्मिक पक्ष अभिव्यक्त होता रहा है। हमें इस अपनी परंपरा से कटना नहीं है अपितु अपनी परम्परा से ही इस लेकर आधुनिकता को चित्रित करना है।

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

ਸਿੱਖੀ

ਸਿੱਖੀ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ 1602

ਸਿੱਖੀ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ 1602
ਸਿੱਖੀ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ 1602
ਸਿੱਖੀ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ 1602

ਸਿੱਖੀ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ 1602
ਸਿੱਖੀ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ 1602
ਸਿੱਖੀ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ 1602
ਸਿੱਖੀ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ 1602
ਸਿੱਖੀ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ 1602
ਸਿੱਖੀ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ 1602
ਸਿੱਖੀ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ 1602
ਸਿੱਖੀ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ 1602
ਸਿੱਖੀ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ 1602
ਸਿੱਖੀ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ 1602

प्रश्नावली

1. कला क्या है ?
2. कला के विभिन्न नामों को बताइए।
3. वास्तुकला क्या है ?
4. शिक्षा में कौन-कौन सी कला शामिल है ?
5. कितनी पाँच भारतीय धरोहरों के नाम बताइए।

Attested

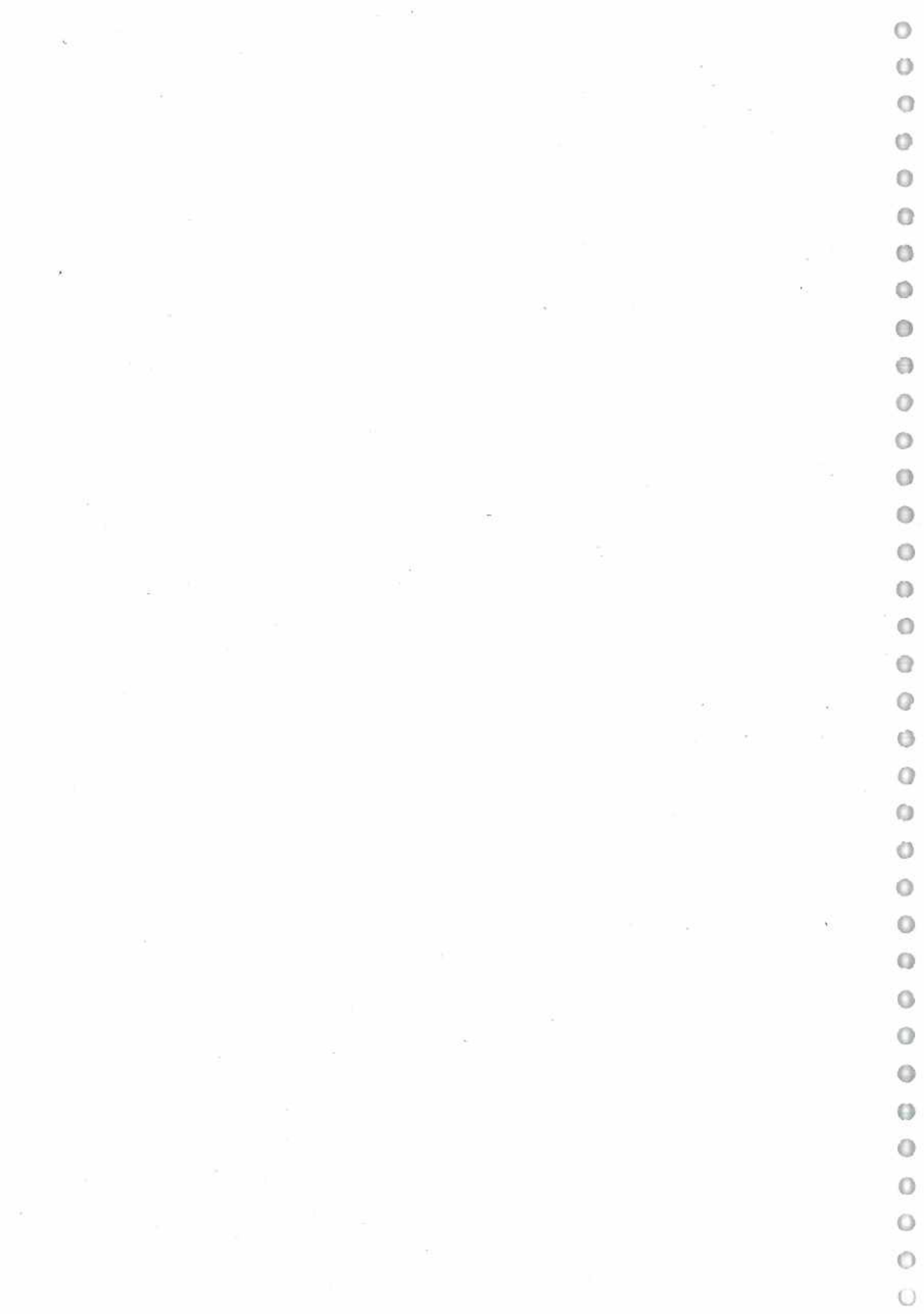


Principal

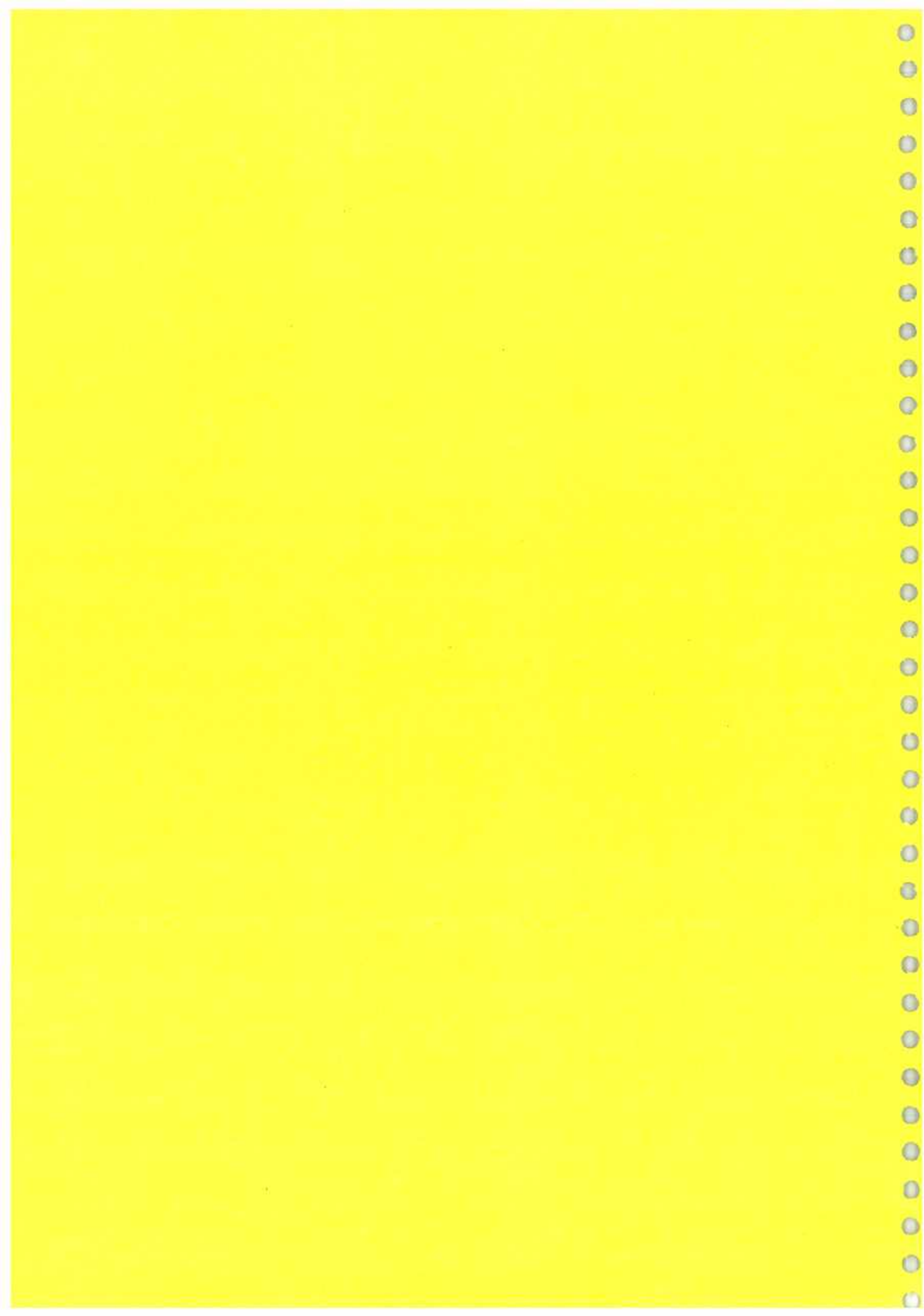
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi











BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION



An Abode of Education

Kandri, Mandar, Ranchi

B.Ed

SESSION: 2018-2020

EPC-2

PROJECT-2

TOPIC- "भारतीय परम्परागत शिल्पकला"

EXTERNAL

Guided by: -

**ASST. PROF
RAKESH KUMAR RAI**

Submitted By:-

**NAME: - NISHANT ASHISH TIRKEY
ROLL NO: - 12
SESSION: - 2018-2020**

Attested

**Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi**



2. भारतीय परम्परागत शिल्पकला क्या है?
तथा इसकी शिखा में क्या योगदान है?

परिचय :- शिल्पकला ऐसे कलात्मक कार्य को कहते हैं जो उपयोगी के साथ-साथ सजाने के काम आता है, जिसे मुख्यतः हाथ से या सरल औजारों की सहायता से बनाया जाता है। ऐसी कलाओं का धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व होता है। भारतीय हस्तशिल्प को शिल्पकला का सर्वोच्चकृष्ट माना जाता है। यहाँ दैनिक जीवन की सामान्य वस्तुएँ भी कोमल कलात्मक रूप में गढ़ी जाती हैं। भारत का प्रत्येक क्षेत्र अपने विशिष्ट शिल्पकला पर गर्व करता है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

हस्तकौशल / शिल्पकला की प्रकृति एवं स्वरूप

1. कार्यारम्भ :- किसी हस्तकार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व शिल्पी को यह पता होना चाहिए कि उसे अपने कर्म से क्या निर्मित करना है? उदाहरणार्थ यदि किसी शिल्पी को 'लक्ष्मी' की मूर्ति बनाना है तो लक्ष्मी की मूर्ति का आकार, स्वरूप उसके हृदय में पूर्वाभास और पूर्वानुभव के कारण अंकित रहता है। उसे उस मूर्ति के परिदृश्य के विभिन्न अंगों के अनुपात का ज्ञान होना है। मूर्ति के साँचे का परिमाण का ज्ञान रहता है तब वह अपना कार्य प्रारम्भ करता है।

2. लक्ष्य का दृष्टान्त :-

हस्तशिल्पी को कार्य करते हुए लक्ष्य तक पहुँचने के लिए विचार-मंथन करना रहता है, अर्थात् उसे तय करना रहता है कि वह मिट्टी की मुर्ती बनाएगा या पलस्तर की। शिल्पी को ज्ञात रहता है कि उसके सामने मिट्टी मौन है, वह साँचे और उपालियाँ के स्पर्श से आकार देकर अपने लक्ष्य को कैसे साकार करेगा। उसे इस बात का भी आभास रहता है कि साँचे को कितने दबाव से दबाना है ताकि मूर्ति का सही आकार प्रस्तुत हो सके।

इसके अलावा एक शिल्पी को प्रस्तुत वस्तु बनाते से पूर्व अनगढ़ कच्चे माल के संरक्षण की आवश्यकता होती है।

3. रूप और वस्तु का वैषम्य :-

हस्तकौशल के लिए प्रयुक्त सामग्रियों का रूप और आकार अनिश्चित होता है जिससे शिल्पी अपने कौशल द्वारा सवार कर एक निश्चित दशानीय रूप देता है। जैसे - मिट्टी से मूर्ति या बर्तन, लकड़ी से कुर्सी या अनेक प्रकार के सामान इत्यादि।

4. अन्योन्याश्रित :-

हस्तकौशल की एक विशेषता यह भी होती है कि वे सभी अन्योन्याश्रित होते हैं। अर्थात् एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। उदाहरणार्थ सूत काटना, कपड़ा बुनना, कपड़ा मिलाना ये सभी हस्त कौशल एक दूसरे से संबंधित हैं।

प्रकार :-

हस्तकौशल के कई प्रकार हो सकते हैं, परन्तु सबका लक्ष्य सामाजिक उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करना होता है।

Attested



Principal

Bharati College of Education
Kharai Mandar, Ranchi

कौशल का उदाहरण	कौशल का लक्ष्य
1. बड़ई का काम, मोची का काम, दही का काम आदि।	काम में आनेवाले विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का निर्माण।
2. कृषि, वागवानी आदि।	उत्पादन करना (जीवन-यापन हेतु)।
3. वैद्यक शिक्षण आदि।	भारीरिक और बौद्धिक विकास तथा ज्ञान का हस्तान्तरण।

विभिन्न प्रकार की शिल्पों का उद्देश्य आवश्यकता अनुसार अलग अलग होता है, परन्तु सभी मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। मनुष्य की आवश्यकता शिल्पी की रचना या निर्माण के लिए प्रेरित करती है। जैसे- दिवाली के पर्व पर मिट्टी की मूर्तियाँ एवं खिलौने, विविध अवसर पर कविता या संगीत होता है। यदि सभी चित्रकार, मूर्तिकार, नृत्यकार तथा संगीतज्ञ मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रचना करते हैं तो सब शिल्पी हैं।

6 कार्यप्रणाली :-

कौशल या शिल्पी की एक निर्धारित कार्यप्रणाली होती है। इस कार्यप्रणाली को



शिक्षा और अभ्यास से सीखा जाता है। कोई भी व्यक्ति जब तक शिक्षणकार्य नहीं कर सकता जबतक उसे इस शिक्षण के औजारों या उपकरणों के प्रयोग की विधियों का अभ्यास न हो। जैसे - ब्लूप्रिंट बनाने वाले शिक्षण की स्टाटिक चूर्ण, काँच गौदें, कोबाल्ड - आक्साइड मिर्च रंग, मट्टी, हस्तचालित पिसार के चक्की कुम्हा-चक्र, सॉच, ब्रश, लकड़ी के हथौड़े आदि के प्रयोग का ज्ञान और अभ्यास होना चाहिए। बड़क के काम करने वालों को रन्दा, भारी, बसुला आदि चढ़ाने का अभ्यास होना चाहिए।

इस प्रकार कई हस्तशिल्प में एक प्रकार का ही सामान या औजार का प्रयोग होता है। जैसे - काष्ठ शिल्प और सोने-चाँदी के चक्र के काम दोनों में हथौड़ी का प्रयोग होता है परन्तु हथौड़ी चढ़ाने का तरीका अलग अलग होता है। इस प्रकार प्रत्येक हस्त-कौशल और कलाओं में इसके उपकरणों का प्रयोग का ढंग निश्चित होता है, यही प्राथमिक कार्य-प्रणाली कहलाती है।

7. कार्यकुशलता :-

कार्यप्रणाली का ज्ञान हो जाने का मतलब है कि व्यक्ति कार्य को शुरुआत करने की योग्य हो गया है। कार्य में कुशल होने का अर्थ है कि शिक्षण अपने कार्य में मौलिकता और सृजनत्मकता का समावेश करें। जैसे राजस्थान की श्रुतियाँ।

Attested



Principal
Bharathi College of Education
Vandri Mandar, Ranchi

भारत में विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प

1. बाँस हस्तशिल्प :-

बाँस का निर्माण होने के कारण भारत में बाँस से बने हस्तशिल्प सबसे इको-फ्रेंडली शिल्प होते हैं। बाँस से कई-कई प्रकार के सामान बनते हैं। जैसे - टोकरी, गुड़िया, खिलौने, कौसवा, खोराही, कुला, डुकुला, काठी, गहने के बक्से इत्यादि। बाँस का उत्पादक हस्तशिल्प पश्चिम बंगाल, असम और त्रिपुरा में बनता है।

2. लैस मेटल हस्तशिल्प :-

पीतल के कड़े के रूप जिसका उपयोग घंटी बनाने में किया जाता है उसे लैस मेटल कहते हैं। इस कड़ी मिश्रधातु का उपयोग सिंदूर के बक्से, कटोरे, मोमबत्ती स्टैंड, पेडेंट और अन्य कई शिल्प बनाने में किया जाता है। यह हस्तशिल्प मध्य प्रदेश, बिहार, असम और मणिपुर में प्रचलित है। मध्य प्रदेश में इस हस्तशिल्प का आदिवासी शिल्प के रूप में जाना जाता है।

3. पीतल हस्तशिल्प :-

पीतल के समानों की समूहबिनिटी के कारण पीतल के बर्तन मशहूर हैं।



Attested
Principal
Bharathi College of
Kandri, Mandar, Karnataka

पीतल से बने सामान जैसे - रंगत कृष्ण या गणेश की विभिन्न मुद्राओं की मूर्तियाँ, फूलदान, टेबल टॉप, हैदवाले लैम्प, गहने के बक्से, हुक्का, रिवल्वर, वाइन ग्लास, प्लेट्स आदि। पीतल के बर्तन ज्यादातर राजस्थान में बनाए जाते हैं।

हड्डी और सींग हस्तशिल्प :-

ओडिसा के राज्य में जन्मे हड्डी और सींग के हस्तशिल्प पल्ली और जानवरों के रूप बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं जो असली और बहुत जीवंत लगते हैं। इसके अलावा स्टैंड गहने, सिगरेट के डिब्बे, टेबल लैम्प, झरंजे सेट, मिच और नकम सेट आदि। ये मुख्यतः ओडिसा, कर्नाटक, केरल और उत्तर प्रदेश में बनाए जाते हैं।

5. जूट हस्तशिल्प :-

पूरी दुनिया में जूट हस्तशिल्प में जूट कारीगरों ने अपनी खास जगह बनाई है। जूट शिल्प की विस्तृत रेंज में बैग, ऑफिस स्टेशनरी, चूड़ियाँ, गहने, कुटनेयर, वाले हैंगिंग और कई सामान शामिल हैं। ५० बंगाल, असम और बिहार सबसे बड़े जूट उत्पादक हैं और भारत में जूट हस्तशिल्प बाजार के अग्रणी भी हैं।



I have been thinking of you a great deal lately
 and wondering how you are getting on. I hope
 you are well and happy. I have been very busy
 lately, but I will try to write to you more often.
 I am still in the same place, but I am
 feeling better now. I hope to go home soon.
 I am sure you will be glad to hear from me.
 I am always your affectionate friend,
 John Doe



Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi



कागज हस्तशिल्प :-

चटकदार रंगों वाले कागज को मिलाकर कई शिल्प जैसे - पतंगा, मास्क, लैम्प शैड, सजावटी फूल, कठपुतली हाथ के पेरवे आदि बनाये जाते हैं। मुगलकाल में विकसित हुआ कृष्टी भारत में कागज हस्तशिल्प का प्रसिद्ध रूप है। यह शिल्प इलाहाबाद मुख्य रूप से दिल्ली, राणगिरि, पटना, गया, अहमदाबाद और इलाहाबाद में स्थित है।

मिट्टी के हस्तशिल्प :-

सिंधु घाटी सभ्यता में उत्पत्ति होने के बाद से मिट्टी के बर्तन भारत में हस्तशिल्प का सबसे प्राचीन रूप है। इस काम में सलगुन लोगों को कुम्हार कहा जाता है। विश्व प्रसिद्ध टेराकोटा रूप के अलावा मिट्टी के हस्त-शिल्प में गाल बर्तन, गे बर्तन और काले बर्तन के रूप हैं। उत्तर प्रदेश काले पोट के बर्तनों के लिए जाना जाता है। पश्चिम बंगाल के कृष्णानगर के अलावा बीकानेर, लखनऊ, पुणे और हिमाचल प्रदेश में मिट्टी के बर्तन बनाए जाते हैं।

Attested


Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शिल्पकला का शिक्षा में योगदान

हस्तकला सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के उत्कर्ष की महत्वपूर्ण विद्या है। हस्तकला मानव जीवन के उद्गम और विकास की अखिल कहानी का अभिव्यक्तिकरण है। संपूर्ण भारत या विश्व में हस्तकला का अध्ययन और प्रतिवेदन है।

पाठ्यपुस्तकों में भात तथ्यों और सूचनाओं का ही संग्रह हो तो विषयवस्तु जीरस और डबाऊ लगाने लगीगी। हस्तशिल्प के माध्यम से संसा-नात्मक समक्ष का विकास किया जा सकता है। चित्तों के माध्यम से प्रस्तुत विषयवस्तु एक और तो विद्यार्थियों को आकर्षित करती हैं तो दूसरी और इनमें जिज्ञासा जगाती है।

बालक, शैश्यावस्था से ही चित्तों को देखकर वस्तुओं की पहचानना सीखता है। चित्तों के द्वारा अध्ययन कर विद्यार्थी विषयवस्तु को सरलता तथा स्पष्टता से सीखने में सक्षम होते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2005 ऐसे पाठों की वकालत करती है जिनमें गतिविधियाँ चित्र, तस्वीरों, मानचित्रों, कार्टूनों का समावेश है। ये सब चीजें विषयवस्तु को रोचक तथा आनंद-दायक बना देती हैं।

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

हस्तकला में शिक्षा

यूरोप में 18 वीं शताब्दी में सौन्दर्य शास्त्रियों ने कलात्मक कार्यों को तीन वर्गों में विभाजित किया :-

- I सौन्दर्यात्मक लक्ष्य से संबंधित कार्य - ललित कला
- II नैतिक कार्य - आचरण कला
- III उपयोगी कार्य - उदार कला

उपरोक्त वर्गीकरण से स्पष्ट होता है कि कलाओं से मानव कल्याणकारी शिक्षा की प्राप्ति होती है। कला सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की व्यवहारिक रूप प्रस्तुत कर व्यक्ति को कर्तव्य पथ पर अग्रसर करती है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार :-

“हृदय की मुक्तावस्था रस-दशा कहलाती है। इस रस-दशा में ज्ञान के पश्चात् ही मनुष्य अपनी पृथक् सत्ता को भूलकर अपने हृदय की स्वार्थ संबंधी के संकुचित मण्डल के ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भावभूमि पर ले जाता है। इस भूमि पर पहुँचे हुए मनुष्य को कुछ काल तक अपनी सत्ता की लोक-सत्ता में लीन कर देना होता है।”

Attested



Principal

Bharathi College of Education
Kandri, Mandla, Ranchi



Dear Mr. [Name],
 I have just received your letter of the 15th inst.
 regarding the matter of the [Name] and I am
 glad to hear that you are interested in the
 same. I have been thinking about this matter
 for some time and I am sure that you will
 find the information I am about to give you
 of great interest. I have been thinking about
 this matter for some time and I am sure that
 you will find the information I am about to
 give you of great interest. I have been thinking
 about this matter for some time and I am sure
 that you will find the information I am about
 to give you of great interest. I have been
 thinking about this matter for some time and
 I am sure that you will find the information
 I am about to give you of great interest.

I am sure that you will find the information
 I am about to give you of great interest. I
 have been thinking about this matter for some
 time and I am sure that you will find the
 information I am about to give you of great
 interest. I have been thinking about this
 matter for some time and I am sure that you
 will find the information I am about to give
 you of great interest. I have been thinking
 about this matter for some time and I am
 sure that you will find the information I am
 about to give you of great interest. I have
 been thinking about this matter for some time
 and I am sure that you will find the
 information I am about to give you of great
 interest.



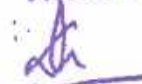
हस्तकला के अन्दर शिक्षा के निम्न प्रयोजन सौनाहित हैं:-

- (क) कला शिक्षा
- (ख) जीवन की शिक्षा
- (ग) सेवा शिक्षा
- (घ) अनुभूतियों की शिक्षा
- (ङ) भानन्द की शिक्षा
- (च) मनोरंजन की शिक्षा
- (छ) सृजनात्मक की शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1998) और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार :-

“हस्तकला शिक्षा पर विशेष ध्यान देते हुए इसे सभी विषयों के साथ जोड़ना चाहिए। हस्तकला शिक्षा भी माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर तक एक विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए।” कला में शिक्षा के तत्वों की सम्पृक्तता के कारण ही विद्यालयी स्तर की शिक्षा में विविध स्तरों एवं अवसरों पर विविध प्रकार के कलात्मक गतिविधियों का आयोजन किया जाता रहता है। जैसे - मिट्टी के हस्तशिल्प, कागज के हस्तशिल्प, छूट के हस्तशिल्प, बरसों के हस्तशिल्प आदि का आयोजन कर विद्यालय शिक्षा के अमीष्ठ लक्ष्यों की प्राप्त करने का प्रयास करना है।

Attested



Principal

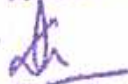
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

प्रश्नावली

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. हस्तकला क्या है ?
2. हस्तकला के किन्हीं पाँच कलाओं के नाम बताइए ।
3. कागज हस्तकला के बारे में बताइए ।
4. जूट हस्तकला से क्या क्या चीजें बनाई जाती हैं ?
5. बिल्व और कला में दो अंतर बताइए ।

Attested



Principal
Bharathi College of Education
Kendri, Mandar, Ranchi





